kissekahani.com

स्कूल क्यों शुरू हुए

गुफा में रहने वाले आदि मानव तक ने अपने अनुभव बच्चों को बताए । यदि वे ऐसा नहीं करते तो कोई भी बच्चा परिस्थितियों का सामना नहीं कर सकता था । वे खतरनाक जानवरों के बारे में अनजान रह जाते, उन्हें पेड़ पौधों का भी ज्ञान नहीं होता, न ही वे स्वयं को गर्म रखने के लिए आग जला पाते ।

सदियों बाद मनुष्य ने अपनी जानकारी और अनुभवों को लिखपाना सीखा । इसके द्वारा ज्ञान को बच्चों और पोतों तक पहुँचाना आसान होता गया । लिपी के आविष्कार के बाद धीरे धीरे स्कूल खुले । पहले पहल स्कूल मैसौपोटामिया और इजिप्ट में तीन या चार हजार साल पहले खोले गए ।

स्कूलों का उद्देश्य ज्ञान बांटना और नई पीढ़ी के कर्णधारों को जीवन जीना सिखाना था, लेकिन पुराने जमाने के समाज की रूपरेखा कुछ ऐसी थी कि सबको शिक्षा देना अच्छा नहीं समझा जाता था । उदाहरण क तौर पर इजिप्ट में उन्हीं युवाओं को उच्च शिक्षा दी जाती थी, जो भविष्य में पादरी, सरकारी अफसर, शिल्पकार या डॉक्टर बनने वाले हों । इसलिए सिर्फ कुछ ही लोगों को यह शिक्षा मिल पाती थी ।

हिब्रू नामक प्राचीन मानव जाति में शिक्षा की अच्छी व्यवस्था थी । जब तक वे स्वतंत्र थे । हरेक परिवार का

kissekahani.com

मुखिया अपने बच्चों को परिवार के सदस्यों के साथ साथ धार्मिक और कानूनी जानकारी भी देता था । बाद में जब उन्हें विदेशियों का गुलाम बनना पड़ा । तब वे अपने रीति रिवाजों और धार्मिक परंपराओं के समाप्त हो जाने से भयभीत थे । इसलिए उन्होंने व्यापक रूप से स्कूल खोले, जहां अमीर गरीब सभी लोगों की भाषा, धर्म और जाति के इतिहास की जानकारी दी जाती थी । यह व्यवस्था ही शायद मानव जाती के इतिहास में अमीर सबको नियामानुसार एक ही शिक्षा देने का माध्यम थी । और फिर समय के साथ

साथ शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार एवं विस्तार के प्रयास किए गए जो आज भी निरंतर जारी हैं । शिक्षा के द्वारा ही हम अपने भूत, भविष्य व वर्तमान को सुदृढ़ बना सकते हैं ।

-दिनेश दर्पण

मूर्ख व्यक्ति बिना बुलाये भीतर घुस आता है और बिना पूछे बोलने लगता है जिस पर विश्वास नहीं करना चाहिये उसका विश्वास मूर्ख करता है

महा भारत

साप्ताहिक लोटपोट

1-9-91 अंक 1014

सम्पादक एवं प्रकाशक:
: ए.पी. बजाज
सह-सम्पादक :
: अमन
: श्वेता

पता: लोटपोट साप्ताहिक
ए-5, मायापुरी,
नई दिल्ली-110064
दूरभाष:
5433120-591439
593904-536103
TLX No.-031-76125 MPLP IN
मुद्रक : अरोड़बंस प्रेस
मायापुरी,
नई दिल्ली-110064

'लोटपोट' शीर्षक आर.एन.आई भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है। लोटपोट में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। इसलिए बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए।

प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, जीवित मृत स्थानों घटनाओं या संस्थाओं से उनकी किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है। चित्रांकन, चित्रकार की कल्पना पर ही आधारित है, सम्पादक एंव प्रकाशक किसी प्रकार के उत्तरदाई नहीं होंगे।

प्रकाशित लेखों के लेखकों की राय से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं, किन्तु छपे लेखों पर अगर किसी को आपत्ति हो तो वह अपनी प्रतिक्रिया हमें लिखकर भेज दें। मिलने पर छापने योग्य होने पर सहर्ष छाप दी जाएगी।

इस पत्रिका के संबंध में किसी भी प्रकार के मतभेद एंव विवाद आदि केवल दिल्ली कोर्टस से ही निपटाए जा सकते हैं।

घर भर के
मनोरंजन
के लिए
एक ही
नाम

पिटारा कॉमिक्स

* आज ही अपने पत्र विक्रेता से खरीदें
* सभी रेलवे बुक स्टालों पर भी उपलब्ध है

मूल्य
3/- रूपये

पिटारा कॉमिक्स, ए-5, मायापुरी, नई दिल्ली - 110064
दूरभाष - 5433120, 591439, 593904

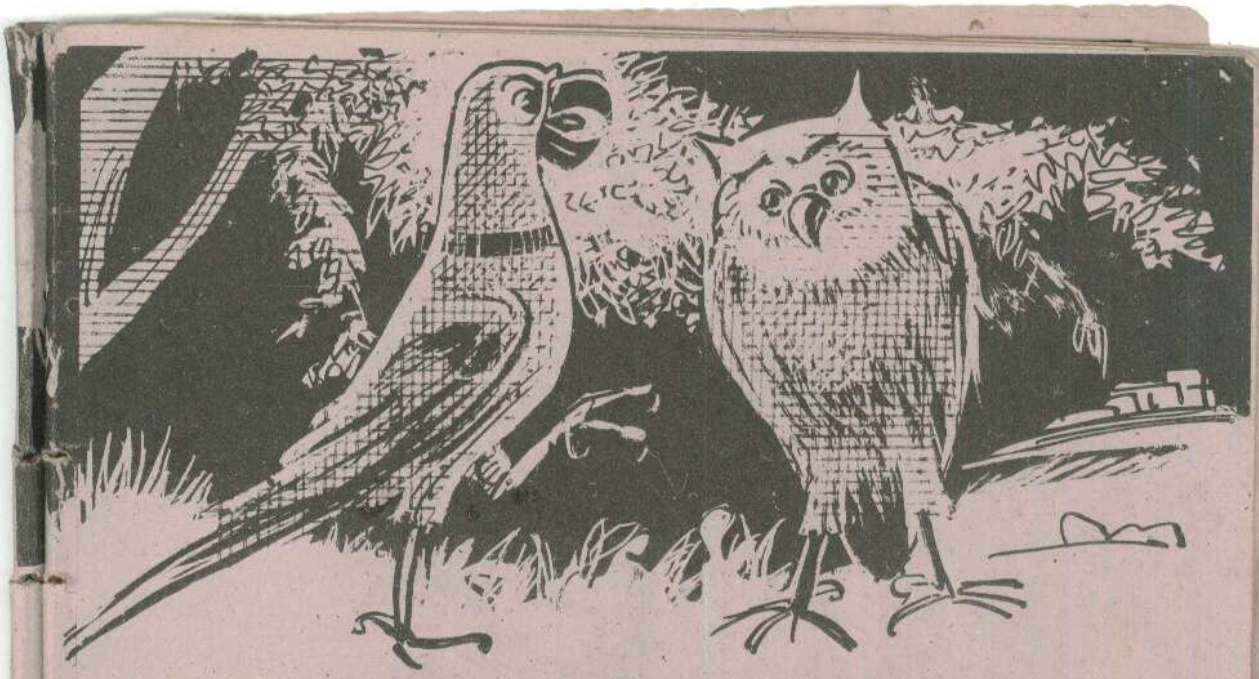

बोली के बोल

जंगल के एक घने पेड़ पर दो घोसलें बने थे । एक में उल्लू तथा दूसरे में तोता रहता था । दोनों में पक्की मित्रता थी । सुख, दुःख में एक दूजे का हाथ बटाया करते ।

तोता दिन भर इधर उधर भ्रमण पर जाया करता, तो उल्लू अपने मित्र तोते के घोंसले की रखवाली किया करता । जब रात्रि में उल्लू उडान पर जाता तो तोता उसके घोसले की देख रेख किया करता एक दिन, मौसम बड़ा सुहावना था । आसमान से रिमझिम पानी बरस रहा था । तोता अपने ही घोसले से वर्षा, की फुहारों का आनन्द ले रहा था । अचानक उसकी नजर उदास बैठे उल्लू पर अटकी तो वह तुरन्त उसके पास जाकर बोला-

'क्यों मित्र ! उदास क्यों बैठे हो ?'

उल्लू बोला 'मैं यह स्थान छोड़ रहा हूँ और अब पूरब दिशा में बसने जा रहा हूँ... ।

तोते ने पूछा 'लेकिन तुम यहां बरसों से रह रहे हो, तुम्हारा घोंसला यहां सुरिक्षत है...और वैसे यह स्थान तो हरे भरे जंगल के बीच है..फिर भी तुम यहां से जाना क्यों चाहते हो ?'

'उल्लू बोला 'मेरी बोली इस दिशा में किसी को पसन्द नहीं आती, रात्रि में जिस घर या पेड़ पर जाकर गुनगुनाने लगता हूँ...लोग पत्थर मार कर मुझे उड़ा देते हैं..' यह सुनकर तोता बोला ''अगर तुम अपनी बोली बदल दो, तो सब ठीक हो जाएगा । और अगर तुमने ऐसा न किया, तो पूरब दिशा में भी लोग तुम्हें इसी तरह ना पसन्द करेंगे...'.

-कमल सौगानी

सज्जनता की चमक

शहर के शोरगुल तथा चकाचौंध से दूर, एक शांत सुन्दर, प्रकृति की हरी भरी गोद में एक संत, ज्ञानी पुरूष अपने कुछ शिष्यों के साथ आश्रम बना कर रहते थे। सरल मन के प्रभु चर्चा में लीन रहने वाले। सारा समय ज्ञान चर्चा और सत्संग में बीतता। अपने ज्ञानी तथा सज्जन मन के गुरू की छांव में सभी शिष्य बड़े सुख व प्रेम भाव से रहते थे।

रोजाना की तरह ही आज भी ज्ञान चर्चा जारी थी। गुरू जी अपने शिष्यो के साथ सज्जन दुर्जन व्यक्तियों, गुणों अवगुणों के विषय में चर्चा रत थे। तभी एक शिष्य ने प्रश्न किया। गुरू देव एक सज्जन पुरूषो, सद्गुणों से युक्त व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान बताने की कृपा करें।'

'शिष्य का प्रश्न सुनकर वे धीमे से मुस्करा दिए बोले 'अवश्य, बताता हूँ, पर एक प्रयोग करके।'

'वह क्या' शिष्य ने जिज्ञासा प्रकट की। ऐसा करो कि दो पात्रों में जल लाओ, एक पात्र में दूषित गंदगी से भरा हुआ पानी तथा दूसरे में साफ स्वच्छ निर्मल जल उन्होंने कहा।

गुरू के कथानुसार वह दो पात्रों में जल भर कर लाया। एक पात्र में कीचड़ मिट्टी युक्त गंदा जल था तथा दूसरे में साफ चांदी सी चमक वाला निर्मल जल। दोनों पात्रों को उसने गुरूजी के समक्ष रख दिया।

'अब ऐसा करो कि एक मुट्ठी बालू ले

> कर्ज दी गई पूंजी ही सारे अनर्थों की जड़ है और अन्याय मूलक युद्धों की जननी है।
>
> -रस्किन

आओ और दोनों पात्रों में थोड़ी थोड़ी डाल दो ।' गुरू जी ने कहा।

कथनानुसार, वह बालू ले आया और थोड़ी

थोड़ी बालू दोनो पात्रों में डाल दी । कुछ देर पानी में तैरती हुई वह बालू पानी की सतह पर जाकर बैठ गई।

पानी में बालू की प्रतिक्रिया तथा शांत होकर बैठने की सारी स्थिति को ध्यानपूर्वक देखते हुए शिष्य से उन्होंने पूछा । 'पानी और बालू की प्रतिक्रियाओं से तुम क्या देखते हो ?'

'गुरूजी, पहले बालू । में कुछ देर तैरी फिर वह सतह पर बैठ गई । स्वच्छ जल की सतह पर बालू के कण चांदी की तरह चमक रहे हैं और दूषित जल में यद्यपि उनकी चमक वैसी नहीं दिख रही है जैसी की साफ जल में हैं । परन्तु वे चमक वहां भी रहे हैं ।' शिष्य ने जवाब दिया ।

'बस यही, स्थिति सज्जन, सद्गुणी व्यक्तियों की होती है । अच्छे स्वच्छ वातावरण में जहां उनके गुणों, सज्जनता की रोशनी की चकाचौंध होती है, वही दूसरी ओर दूषित, दुर्जनता भरे

माहौल में भी वे अपने गुणों, अपनी पहचान को नहीं छोड़ते । हां ये बात है कि माहौल की गंदगी, कपटता कुटिलता का अंधियारा उनकी रोशनी, उनकी चमक को हल्का सा ढक देता है, परन्तु फिर भी वे अपनी पहचान, अपने चरित्र को नहीं खोते ।' गुरू जी ने विश्लेषण कर दिया

'वाह, गुरूजी, आपका जवाब नहीं । शिष्य के मुख से सहसा ही यह शब्द निकल पड़े । उसका सिर गुरू के समक्ष श्रृद्धा-स्वरूप झुक गया था । गुरूजी के मुख पर ज्ञान की चमक भरी मुस्कान विराजमान थी।

-संदीप सक्सेना

kissekahani.com

बूढ़े का साहस

पेड्रो कैडियोटी जब रोजेरियो से ब्यूनस एअर्स पहुँचा तब वह लगातार 76 घण्टे तक जागने के कारण थक गया था, इसलिए गाढ़ी नींद में सो गया। डॉक्टर आश्चर्यचकित थे कि 55 वर्षीय पेड्रो 220 मील तैरने के बाद भी लगभग ठीक था।

पेड्रो कैडियोटी दक्षिण अमरीका के अर्जेंटाइना में क्विल नामक स्थान पर पैदा हुआ था। उसके माता पिता मामूली हैसियत के थे। पेड्रो को बचपन से ही तैरने का शौक था।

सन् 1922 में एक दिन उसने पराना नदी में तैरने का निश्चय किया। जहाँ वह पन्द्रह घण्टे तक तैरता रहा। उस समय उसके मित्र भी साथ थे, जिनके कहने पर उसने तैरना बंद किया। उसकी इस बहादुरी से प्रभावित होकर लोगों ने उसे 'शार्क ऑफ क्विला' नाम दिया।

उस दिन से वह पौ फटने से भी पहले उठ जाता। घण्टों तैरता और फिर माँस पेशियों को मजबूत करने के लिए झूला झूलता, मीलों दौड़ता तथा घण्टों रस्सी पर कूदता रहता। इस प्रकार वह पराना नदी में तैरकर रोजेरियो से ब्यूनस एअर्स तक जाने की तैयारी कर रहा था। इसके लिए उसने दस बार प्रयत्न किया पर केवल अन्तिम बार सफल हो सका। पहला प्रयत्न उसने सन् 1931 में किया था, जब वह रोजेरियो से बाराडेरो तक तैरा। इस प्रयत्न में वह लगभग 78 घण्टे तैरा तथा उस समय के विश्व कीर्तिमान को तोड़कर उसने नया कीर्तिमान स्थापित किया।

एक बार वह सान इसिड्रो तक, जो ब्यूनस एअर्स से केवल 25 मील पर है, पहुँच गया था परन्तु जबर्दस्त नींद के कारण उसे

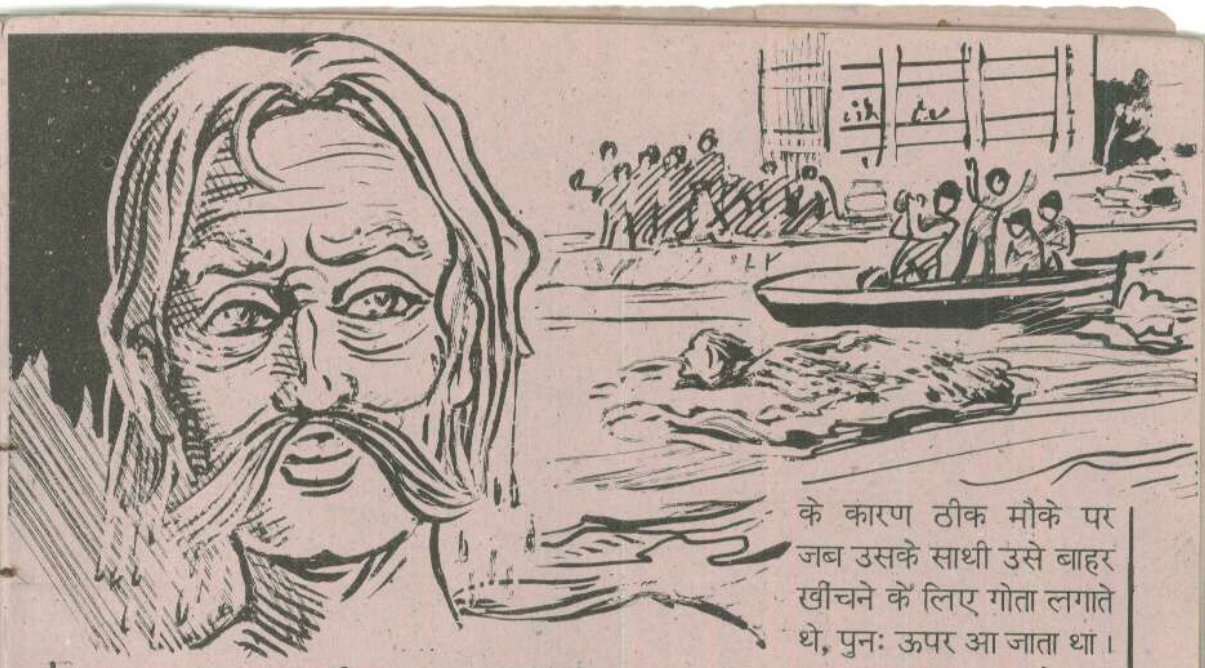

रूक जाना पड़ा । अन्तिम बार उसने सन् 1944 में प्रयत्न किया । वह जिस दिन नदी में कूदा उस दिन सुबह कुहरा छाया हुआ था । और ठण्डी हवा चल रही थी । उसके कुछ मित्र मोटर बोट में बैठकर उसके साथ रवाना हुए ।

दो दिन और दो रात लगातार तैरने के बाद वह टाइग्रे पहुँचा । जहाँ से ब्यूनस एअर्स की दूरी 30 मील है यहाँ आकर नींद के कारण वह धीमे धीमे हाथ चलाने लगा । तभी उसके पाँच मित्र नदी में कूद पड़े तथा उसके आसपास तैरने लगे । साथ में वे गाना गाने लगे और उससे मजाक भी करते जाते ताकि वह जागता रहे ।

धीमे धीमे दूरी केवल 15 मील रह गई । नाव में बैठे उसके साथी उसे बढ़ावा दे रहे थे । पेड्रो के इस अनोखे साहस की खबरें अर्जेंटाइना के रेडियो और समाचार पत्रों द्वारा दी जा रही थी । प्रति घण्टे उसकी सफलता की सूचना जनता को दी जा रही थी ।

पेड्रो अब बहुत धीमे धीमे तैर रहा था । हाथ मारते मारते उसे बाहों में बहुत दर्द हो रहा था । उसके चेहरे पर ऐंठन आ रही थी । अन्तिम पाँच मीलों में पेड्रो तीन बार सोया और करीब करीब तले तक डूब गया, परन्तु हर बार साँस लेने में असुविधा होने के कारण ठीक मौके पर जब उसके साथी उसे बाहर खींचने के लिए गोता लगाते थे, पुनः ऊपर आ जाता था । इस प्रकार 76 घण्टे 15 मिनट तक लगातार तैरने के बाद 55 वर्षीय बूढ़ा पेड्रो ब्यूनस एअर्स तक पहुँच गया । उसके इस कारनामे पर भीड़ खुशी से चीखने लगी । पेड्रो को पानी से खींच लिया गया । उसके ऊपर खूब ठण्डा पानी डाला गया । ताकि वह जागकर अपनी विजय का आनन्द ले सके । लेकिन वह न जागा और नाव पर ही खर्राटे भरने लगा ।

रणवीर सिंह सेठी

> अनुभव बताता है कि
> दृढ़ निश्चय
> आवश्यकता में पूरी
> सहायता करना है
> शेक्सपियर

मिन्नी

— काजलकुमार

मिन्नी कहाँ चल दी?

कल आलसी राम को डाक्टर के पास ले जा रही हूँ।

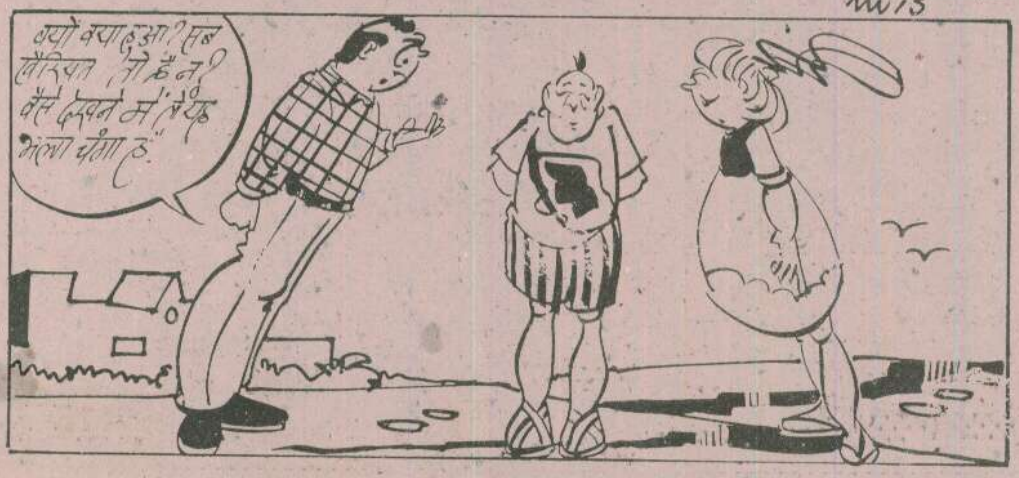
क्यों क्या हुआ? सब खैरियत तो है न? वैसे देखने में तो यह भला चंगा है।

बात दरअसल ये है कि इसे शिकायत है कि इसे नींद न आने की आधी बीमारी है
आधी बीमारी? मैं कुछ समझा नहीं!
इसका कहना है कि इसे 24 घंटे में से केवल 12 घंटे यानि आधा समय यानि इस बात को ही नींद आती है और बाजूनी में दिन में जागकर मेहनत मुशक्कत करनी पड़ती है

प्रगति

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन लंदन गये थे। वहां के किसी अधिकारी ने उनसे अपने देश की प्रगति के विषय में अपना विचार जानना चाहा।

डा. राधाकृष्णनजी ने आदर सहित उत्तर दिया 'मैं तो यही समझता हूँ कि तुम लोगों ने पक्षियों की तरह से आकाश में उड़ना सीख लिया है। मछलियों की तरह पानी में तैरना भी जान लिया है, किन्तु मनुष्य की तरह धरती पर रहना लोगों को नहीं आया।'

-शिव गोपाल शर्मा

पहेलियां

1. एक जानवर ऐसा है जो
दिन में नजर न आता
सो जाएं जब सभी रात में
आकर गीत सुनाता

2. बिना चबाए मुझको निगले
मेरी अजीब कहानी
हर प्राणी से मुझे प्रेम है
मैं हूँ जीवनदानी

3. बिना आंख से दिखता हूं
मैं सबको सोते सोते
हंसी खुशी दुःख सुख में
सबको मैं लगवाता गोते।

4. पानी में जो दौड़ लगाती
पानी ही है उसका घर
जिन्दा भी रह लेती है वह
पानी से बाहर आकर।

उत्तर -1. मच्छर 2. पानी 3. गोता 4. नाव।

-कमला गर्ग

kissekahani.com

आजादी का अर्थ

आजादी मिलने के बाद नेहरू जी राजधानी में एक विशाल जनसभा को संबोधित करने जा रहे थे। वह एक खुली कार में बैठे हुए थे और कार आहिस्ता आहिस्ता सभा स्थल की और बढ़ती जा रही थी। सड़क के दोनों और खड़े नर नारियों की भीड़ देखते ही बनती थी। पीछे खड़े लोग आगे वालों को धकेल कर नेहरूजी के दर्शन करना चाह रहे थे।

तभी नेहरूजी की निगाहें सड़क के एक किनारे जाक टिक गई। एक फटेहाल देहाती किस्म का आदमी आगे खड़ा था। अचानक कुछ लोगों के जोर से धकियाने पर वह बेचारा मुंह के बल धड़ाम से गिर पड़ा। मगर लोगों का ध्यान तो नेहरू जी की और था। अतः किसी ने उधर देखा तक नहीं। तभी एक अधेड़ व्यक्ति उसकी पीठ पर ही खड़ा हो गया और नेहरू जी की कार की और देखने लगा।

नेहरूजी ने वहीं पर गाड़ी रोकने के लिए ड्रायवर को इशारा किया। कार से उतर कर वह वहां तेजी से वहां जा पहुँचे और उस अधेड़ व्यक्ति के गाल पर जोरदार तमाचा जड़ दिया।

जब वह व्यक्ति हक्का बक्का होकर नेहरू जी की और देखने लगा तो उन्होंने कहा 'अरे बेवकूफ ! मेरी और क्या देख रहा है ? इस गरीब देहाती की और देख, जो तेरे पैरों तले कुचला पड़ा है।' उन्होंने देहाती को सहारा उठाते हुए फिर कहा, 'किसी को कुचल कर आगे बढना आजादी का अर्थ नहीं होता, आजादी का मतलब होता है गिरे हुए को सहारा देकर उठाना और सबको साथ लेकर आगे बढ़ना।'

अधेड़ व्यक्ति का माथा शर्म से झुक गया। पीछे से नेहरू जी की जयजयकार गूंज उठी।

–राजकुमार 'राजन'

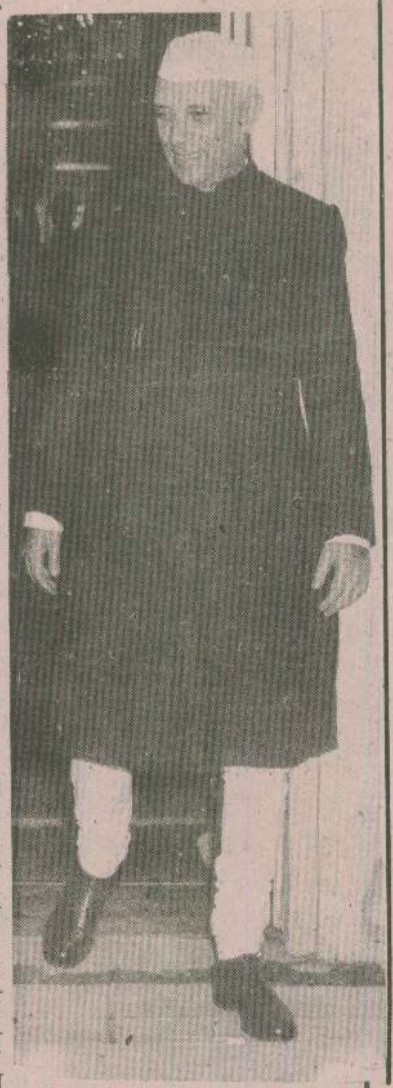

कोई नागरिक इतना अमीर न हो कि दूसरे को खरीद सके और कोई इतना गरीब न हो कि उसे अपने को बेचने के लिये बाध्य होना पडे

–रूसो

विनय की जीत

विनय स्कूल से घर लौट रहा था कि एक जगह उसके कदम ठिठक कर रूक गए। उसके पैरों के पास एक नन्हा सा जड़ सहित उखड़ा पौधा पड़ा हुआ था। मिट्टी में लिपटी उसकी छोटी जड़े स्पष्ट नजर आ रही थी। विनय ने झुक कर पौधा उठा लिया।

'जरूर किसी शरारती बच्चे या आवारा पशु ने यह पौधा उखाड़ा होगा।' विनय ने सोचा फिर उसने सोचा कि 'पौधे को यहीं कहीं फिर से जमीन में लगा दे। मगर फिर कोई बच्चा या जानवर उसे नष्ट कर सकता था।

यही सोचता हुआ विनय पौधा हाथ में दबाएं अपने घर तक आ गया। उसका घर एक इमारत की पहली मंजिल पर था। विनय ने मां को बताए बिना एक पुरानी खाली डिब्बा लिया और उसमें मिट्टी भरके उसमें पौधा लगा दिया। उसके बाद उसमें थोड़ा पानी भी डाल दिया। फिर वह कपड़े बदल कर खाना खाने बैठ गया।

मुर्झाया हुआ पौधा दो ही दिन में फिर तन कर खड़ा हो गया। और एक हफ्ते बाद तो उसमें नये पत्ते भी निकलने लगे। विनय बहुत खुश हुआ। वह रोज उस पौधे में सुबह शाम पानी डालता था।

लेकिन जब मां और पिताजी को उसका पता चला तो उन्होंने कहा, यह तुम कौनसा जंगली पौधा उठा लाए विनय, इसमें न तो फूल निकलेंगे न सुन्दर लगेगा। बड़ा हो गया तो उठा कर बाहर फेंकने में भी परेशानी होगी। इसे तुम अभी फेंक दो।'

लेकिन विनय ने जिद की और पौधे को घर में ही रखने के लिए मां पिताजी को आखिर मना ही लिया।

एक महीने में ही वह पौधा

विनय के कंधे जितना ऊंचा हो गया। उसमें कई टहनियां और ढ़ेर सारे पत्ते निकल आए थे। अब तो विनय के पिताजी ने स्पष्ट कह दिया कि यह पौधा घर में नहीं रह सकता इसे निकालना ही होगा।

विनय एक समझदार लड़का था। वह समझ गया कि यह कोई जंगली पेड़ है और पेड़ तो घर की बालकनी में उगाया नहीं जा सकता। लेकिन वह इसे फेंकना भी नहीं चाहता था। पौधे से उसे लगाव हो गया था इसलिए वह सोचने लगा कि इस पौधे का क्या किया जाए?

तभी उसे अपने दोस्त मनीष की याद आई। मनीष के घर के आगे पीछे खुली जगह थी। जिसमें मनीष और उसके पिता ने कई फूल पौधे और पेड़ लगाए हुए थे। विनय को पूरा विश्वास था कि मनीष उसके पौधे को अपनी खाली जमीन में लगा देगा। वह उस समय मनीष से मिलने चल पड़ा।

उसकी बात सुनकर मनीष होंठ सिकोड़ते हुए बोला, 'यार तुम्हारा पौधा तो जंगली है। उसे लगाने से क्या लाभ। देखो, हमारे यहां तो सिर्फ आम और अमरूद के पेड़ लगे हुए हैं, जिनसे हमें ताजे और स्वादिष्ट फल खाने को मिलते हैं।'

'मगर मेरा पौधा हरियाली तो करेगा। ठंडी छांव भी देगा।'

'माफ करना यार, हमारे यहां तो पहले ही बहुत हरियाली है।'

विनय निराश होकर लौट रहा था कि अनुज का ख्याल आते ही उसके घर की तरफ मुड़ गया। अनुज का बगीचा मनीष के बगीचे से भी सुंदर और बड़ा था।

उसने अनुज को अपनी समस्या बताई। अनुज ने निराशा में सिर हिलाते हुए कहा, 'तुम्हें मालूम है। हमारे बगीचे में तो जैसे ही कोई जंगली पौधा उगता है माली तुरन्त उसे उखाड़ कर फेंक देता है। माफ करना दोस्त मैं अगर तुम्हारा पौधा लगाना चाहूं तो भी पिताजी और माली ऐसा नहीं करने देंगे।'

विनय की हिम्मत अब किसी अन्य दोस्त के पास जाने की नहीं हुई वह जान गया था कि उसके पौधे को कोई नहीं रखेगा। क्योंकि उसका पौधा फल नहीं दे सकता था, सुन्दर नहीं था, उसे बहुत दुःख हुआ और दोस्तों पर गुस्सा भी आया।

रात में अपने बिस्तर पर लेटा विनय सोच रहा था कि वह इस पौधे का क्या करे। पिताजी उसे अब घर में रखने के लिए बिल्कुल

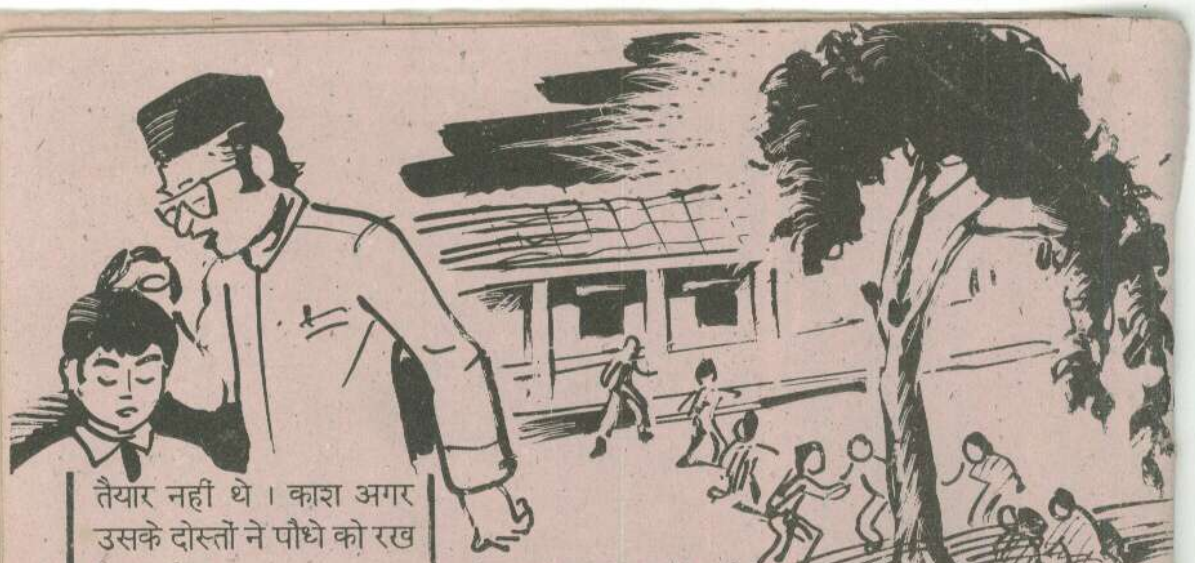

तैयार नहीं थे । काश अगर उसके दोस्तों ने पौधे को रख लिया होता ।

अगले दिन विनय स्कूल पहुँचा तो पढ़ाई में उसका मन बिल्कुल नहीं लग रहा था । वह कक्षा में चुपचाप बैठा हुआ था । आधी छुट्टी हुई तो मास्टर जी ने उसे अपने पास बुलाकर पूछा, 'क्या बात है । विनय मैं बहुत देर से देख रहा हूँ तुम कक्षा में चुपचाप बैठे हो और तुम्हारा चेहरा भी उतरा हुआ है । तबीयत तो ठीक है न ।'

'हां सर ।'

'फिर क्या बात है ।' मास्टर जी ने उसे बोलने के लिए प्रोत्साहित किया, 'हां, हां विनय कहो ।

'सर, मैंने एक पौधा उगाया है ।' विजय संकोचपूर्ण स्वर में बोला, 'लेकिन वह कोई जंगली पेड़ मालूम होता है और सर, हमारे यहां बगीचा नहीं है । इसलिए मेरी समझ में नहीं आ रहा कि उस पौधे का क्या करूं । पौधा काफी ऊंचा हो गया है । उसे घर में नहीं रख सकता ।'

'ठीक है, बेटा, मैंने तुम्हारी समस्या का हल निकाल लिया है ।' मास्टर जी मन्द मन्द मुस्कराने लगे ।

'क्या सर' विनय ने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा ।

मास्टर जी ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'बेटे, तुम्हारे मन में एक पौधे के प्रति जो प्रेम और दया है, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ । मुझे गर्व है तुम पर, कल उस पौधे को अपने साथ ले आना, अपने हाथों से स्कूल के मैदान में लगा देना । यहां पौधा सुरक्षित भी रहेगा और तुम उसे देख भी सकोगे ।'

'धन्यवाद मास्टर जी' विनय कृतज्ञता भरे स्वर में बोला, 'आपने मेरी चिन्ता दूर कर दी ।'

अगले दिन विनज ने पौधा लाकर स्कूल के खेल के मैदान में लगा दिया । मास्टर जी ने सभी छात्र छात्राओं के सामने उसके कार्य की सराहना की और उसकी पीठ ठोंकी यह देख कर मनीष और अनुज के सिर शर्म से झुक गए । फिर कई महीने बीत गए । वह छोटा सा पौधा एक बड़े पेड़ में बदल गया । स्कूल के बच्चे उस पेड़ के नीचे खेलते थे, पढ़ते थे और थकने पर बैठ कर सुस्ताते भी थे ।

-तरूण कुमार राय

kissakahani.com

kissekahani.com

kissekahani.com

kissekahani.com

kissekahani.com

kissekahani.com

kissekahani.com

kissekahani.com

मम्मी का जन्मदिन

अमित की बात सुनकर शुभा खिलखिला कर हँस पड़ी, 'क्या बात करता है, कहीं इतने बड़े भी जन्मदिन मनाते हैं, तेरी मम्मी जन्मदिन मनाती है क्या ? जन्मदिन तो बच्चों का मनाया जाता है, चल।'

'तू अपनी मम्मी से प्यार करती है या नहीं ?' अमित खिसिया कर बोला।

'ये भी कोई बात हुई, मेरी मम्मी तो बड़ी अच्छी है। इठला कर शुभा बोली।

'अगर अच्छी हैं तू नहीं चाहती कि वे खुश हों' अमित ने उसे घूरते हुए कहा।

'हाँ, मम्मी जब खुश होती है तब तो बहुत ही प्यार करती है।'

'तब यदि जैसे वो हमारा जन्मदिन मना कर खुश होती है हम उनका जन्मदिन मनायेंगे तो वो क्या खुश नहीं होगी ?'

'पर उन्हें हम उपहार देंगे कहाँ से वो ही तो सब खर्च करती है वो ही तो सबके लिए चीजें लाती है, उनसे मांगू क्या, मम्मी आपके जन्मदिन पर उपहार देना है. वाह ! वाह! यह भी कोई बात रही। तू भी मना रहा है क्या ?'

'नहीं, मेरे पापा का जन्म दिन पहले पड़ रहा है, मैं अपने जेब खर्च में से पैसे बचाकर पापा के लिए कोई उपहार लाऊंगा, एक कार्ड बनाऊंगा। अमित की आंखें चमक रही थी।

शुभा के मन में उथल पुथल हो गई। उसे अपने मम्मी पापा का जन्मदिन तो मालूम ही नहीं है। पता लगाना चाहिए, कोई बात नहीं आज बातों बातों में पूछ लेगी।

लेकिन उस दिन जैसे बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा। खाने को मेज पर बातों बातों में पापा कह उठे थे कि

हम चारों का जन्मदिन क्रम से पड़ता है । पहले स्वयं उनका फिर मम्मी का फिर शुभा का और सबसे छोटे के काम आये ।

मम्मी के जन्मदिन से एक दिन पहले वह पैसे गिन ही ले आओ ।'

'मम्मी मेरे पास चाकलेट

अनिल का सबसे अंत में ।' तारीखें सुनकर शुभा को बहुत दुःख हुआ क्योंकि पापा का जन्मदिन तो आठ दिन पहले ही निकल गया था ।' ओह ! तो इसलिए उस दिन हम सबको पापा पिकनिक पर ले गये थे ।, 'उसी दिन उसने डायरी में सबके जन्मदिन लिख लिए ।

उस दिन शुभा ने थोड़े थोड़े पैसे छिपा कर जमा करने शुरू कर दिये । अब बाजार जाते समय उसकी आंखे दुकानों पर देखती रहती थी । कि वह मम्मी के लिए क्या खरीदें, ऐसी चीज जो मम्मी रही थी । कि अनिल आ गया । उसने झट से पैसे छिपा लिए । लेकिन उसे कुछ छिपाते देख अनिल ने रोना शुरू कर दिया । मम्मी जी ने अनिल को रोते सुना तो दौड़ी आई, 'क्या बात है ?'

'शुभा दीदी के पास चाकलेट है वो मुझे नहीं दे रही है ।'

'माँ मेरे पास चाकलेट बाकलेट कुछ भी नहीं हैं' उसने झुझलाकर कहा तब तक वह पैसे कपड़ों के नीचे सरका चुकी थी ।

'मम्मी है ! मम्मी है ।'

'उफ ! बेटा, तुम दे दो इसे और पैसे ले जाओ तुम दूसरी नहीं है ! आप पैसे दीजिए मैं अनिल के लिए ला देती हूँ ।'

'वैसे आप दूसरी ला दीजिए । मम्मी जी को गुस्सा आ रहा था ।' अगर भैया को उसमें से दे देगी तो घट ही जाएगी ।'

वह चुपचाप खड़ी रही । वैसे भी बाजार जाने का मौका ढूंढ रही थी । वह अनिल की । चॉकलेट के साथ छः रूमाल भी खरीद लाई पर उसने देखा मम्मी उससे कुछ

मै अपनी पुस्तकों
की छाया में सोना
चाहता हूँ
नरेन्द्र कोहली

गुस्सा सी है । एक बार उसका मन आया वह चीख कर मम्मी को बता दे कि मैं आपके लिए ही पैसे जोड़ रही थी । 'नहीं' यह क्या अच्छा लगेगा ? रात में हाथ से सजाये कार्ड के साथ उसने रूमाल बाँध दिये ।

सुबह ही सुबह जब मम्मी जी की आँख खुली उन्होंने देखा उनके तकिये के पास एक कार्ड और छोटा सा उपहार रखा है !

'मेरी मम्मी के जन्मदिन पर जो दुनियाँ की सबसे अच्छी मम्मी है ।' शुभा ।

एकाएक उनको पहले दिन की घटना याद हो । आई और उनकी आँखें भर आई । शुभा के पास ये रूमाल ही होंगे जिन्हें वह दिखाना नहीं चाहती होगी । छिपाने से अनिल समझा कुछ खाने की चीज है तो अवश्य चाकलेट होगी । उन्होंने शुभा का मुँह चूम चूम कर उसें गले ने लगा लिया । शुभा को अमित की बात याद आई उस दिन जो मम्मी से प्यार किया, वैसा प्यार तो कभी किया ही नहीं था ।'

-डा. शशि गोयल

दुनियाँ का पक्षियों का सबसे

पुरानी दिल्ली के चाँदनी चौक की सड़क के पास एक रंगीन लाल किले सामने और

इमारत है। यह वास्तव में दुनियां का पक्षियों का ऐसा पहला अस्पताल है जहां पर तीन डाक्टर एक के बाद एक सुबह 6 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक पक्षियों का इलाज करते हैं। यह जैनियों द्वारा स्थापित किया गया था।

यहां पर हर साल 20, 000 पक्षियों का इलाज होता है। इनमें अधिकतर वे पक्षी होते हैं। जिन्हें बिल्ली ने घायल कर दिया होता या जो बिजली के पंखे

की चपेट में आकर घायल हो गये हों। इनका 2 से 4 सप्ताह तक इलाज करके छोड दिया जाता है। वैसे भी ठीक हुए पक्षियों को शनिवार के दिन उड़ने के लिए खुला छोड़ दिया जाता है।

जरूरत पड़ने पर अस्पताल के डाक्टर किसी घर में पाले हुए

पहला अस्पताल

बीमार पक्षी का इलाज भी करने चले जाते हैं। सन 1986 में ऐसे 7635 केस आए थे। अस्पताल की प्रथम मंजिल पर आप्रेशन करने के उपकरण तथा दवाएं रखी है। और दीवार के साथ साथ 500 पिंजरों में बीमार और घायल पक्षी रखे हुए हैं। रविवार को पक्षियों को स्नान कराया जाता है। बुद्धवार को उनकी आंखों में दवाए डाली जाती है मंगलवार को पानी में विटामिन घोल कर पिलाया जाता है, ब्रहस्पतवार को टेट्रासाईक्लिन दवा दी जाती है जिससे उनमें किसी रोग का सक्रंमण न होने पाए। एक दिन में 400 किलोग्राम दाना उनके भोजन के रूप में दिया जाता है. जोकि पक्षी दो घंटे में ही चट कर जाते हैं।

-राजेन्द्र शर्मा

चिंप्पू
कांजलकुमार
बेटे, तुम यहीं रहते हो?
जी हां
अरे हम तुम्हें दो रुपये दें तो तुम हमें मोहन नगर का रास्ता बता दोगे?
हां हां, क्या नहीं
तो बताओ

kissekahani.com

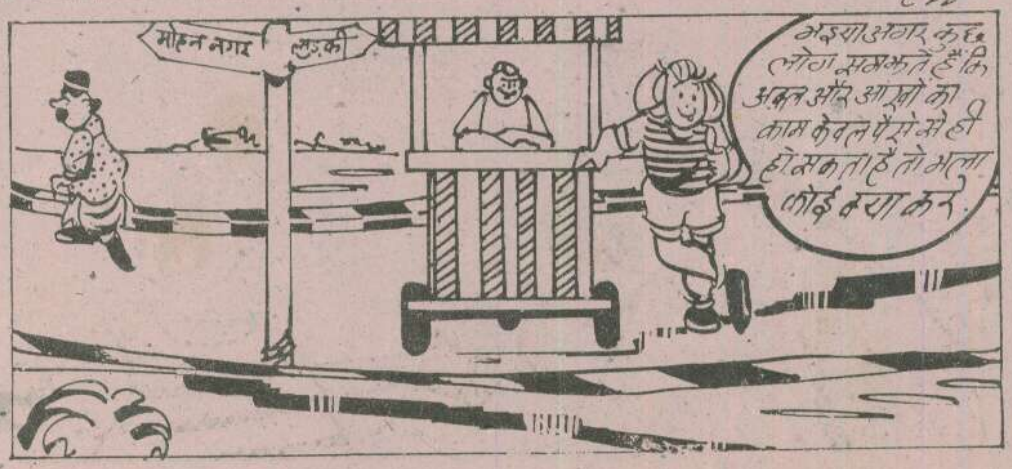

राजीव गांधी को भारत रत्न

पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को मरणोपरांत देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से पिछले दिनो सम्मानित किया गया। भारत के राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमण ने राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में स्व. राजीव गांधी को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। यह सम्मान दिवंगत नेता की पत्नी श्रीमती सोनिया गांधी ने राष्ट्रपति से प्राप्त किया।

श्री राजीव गांधी की हत्या मद्रास के निकट 21 मई को हो गई थी। राजीव गांधी की स्मृतियों में डूबा यह समारोह मात्र 5 मिनट तक चला। राष्ट्रपति ने श्रीमती सोनिया गांधी को 'भारत रत्न' के रूप में पदक और प्रमाण पत्र दिये।

सोनिया गांधी समारोह में मात्र दस मिनट पूर्व ही पहुँची। वे काले बार्डर वाली सफेद साड़ी पहने थी। उसने साथ उनका बेटा राहुल गांधी और बेटी प्रियंका गांधी भी थी।

देश के इस सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित होने वालों में राजीव गांधी सबसे कम उम्र के व्यक्ति है। ज्ञातव्य है कि देश के प्रधान मन्त्री के रूप में भी वे विश्व में सबसे कम उम्र के नेता थे। नेहरू परिवार के वे तीसरे नेता हुये जो प्रधानमन्त्री बने और जिन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

इस विशिष्ट समारोह में जहां लोगों में अपने इस महान नेता के प्रति श्रद्धा और स्नेह की लहर बह रही थी वहीं हर चेहरा राजीव गांधी की याद में डूबा प्रतीत हो रहा था। प्रियंका तो कई बार पिता की याद में सुबकती देखी गई।

इस समारोह में अनेको विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे जिनमें मुख्य थे। राष्ट्रपति की पत्नी श्रीमती जानकी वेंकटरमण, डा. शंकर दयाल शर्मा और उनकी पत्नी श्रीमती विमला शर्मा, भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव, अनेकों मन्त्री और भारी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद थे।

वे 20 अगस्त को 47 वर्ष के हो जाते। अब तक कुल 26 व्यक्तियों को भारत रत्न से सम्मानित किया जा चुका है। 'भारत रत्न' प्रदान करने की शुरूआत सन 1954 में हुई थी। देश के पूर्व गर्वनर जनरल चक्रवर्ती राजगोपाल 'राजा जी' यह सम्मान प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति थे अब तक जिन महत्वपूर्ण व्यक्तियों को यह सम्मान दिया जा चुका है। उनमें से कुछ है डा. गोविन्द वल्लभ पंत, मदर टैरसा, पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई, डा. बी. आर. अम्बेडकर, इंदिरा गांधी और अफ्रीकी नेता नेल्सन मंडेला।

'भारत रत्न' ग्रहण करने के

लिये बुलाये जाने पर सोनिया गांधी धीरे धीरे चलती हुई राष्ट्रपति के पास पहुँची और अपने दिवंगत पति को दिये गये सम्मान को ग्रहण किया। इस अलंकरण समारोह के आरम्भ में और अंत में राष्ट्रीय धुन बजाई गई। समारोह समाप्त होने के बाद राष्ट्रपति राहुल और प्रियंका से भी मिले। बाद में प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हाराव ने भी सोनिया गांधी से भेंट की। इस समारोह को सीधे दूरदर्शन और आकाशवाणी से भी प्रसारित किया गया। दूरदर्शन के सामने बैठे इस समारोह को देख रहे सभी दर्शक राजीव गांधी की स्मृतियों में डूबे थे।

सुधीर भटनागर

हमारा जीवन ऐसा होना चाहिए कि हमारे मरने पर हमें दफनाने वाले भी हमारे लिए दो आंसू बहा दें यानि अनजान व्यक्ति भी हमें याद करें

-पेट्रार्क

टिन्नी का बस्ता

टिन्नी बिटिया से टीचर जी,
बोलीं-'जब आओ स्कूल.
सभी पुस्तकें लेकर आओ,
करो जरा मत इसमें भूल.'

बहुत बड़ा बस्ता टिन्नी का,
और किताबें थीं भरपूर.
पर टीचर जो कहती उस पर,
टिन्नी करती गौर जरूर.

भला आज फिर कैसे करती
टिन्नी बिटिया ऐसी भूल.
इसी लिए देखो खच्चर पर
रख बस्ता जाती स्कूल

बाल समाचार

तार गोला स्पर्धा में खिलाड़ी की मौत।

प्रीटोरिया में तार गोला फैंक के खिलाड़ी बेन होल्तसर की तार गोला के प्रहार से मृत्यु हो गई। तीस वर्षीय होल्तसर रात्रि प्रतियोगिता के दौरान तार गोला फैंक क्षेत्र के पास खड़ा था। तभी स्पर्धा की तैयारी कर रहे उसके अच्छे मित्र और प्रतिद्वन्द्वी लकी टौसिल का फैंका गोला उसके सिर पर जाकर लगा। तथा उसकी मृत्यु हो गई।

बेचारा कुत्ता !

कुत्ता हमेशा स्वामी भक्त ही नहीं अपने स्वामी के लिए प्राण घातक भी सिद्ध हो सकता है। एक कुत्ते से अचानक बन्दूक का घोड़ा दब गया और मालिक की घटना स्थल पर मृत्यु हो गई।

ब्रुसेल्स के 66 वर्षीय जान गिलोन अपनी जीप में बैठे थे तभी उसका कुत्ता भी लपक कर मालिक के पास जा पहुँचा और तभी वहां रखी दोनाली बन्दूक का घोड़ा दब गया और मालिक वही ढ़ेर हो गया।

'घूमता रेस्तरां' दिल्ली का

अन्तरिक्ष भवन की 24वी मंजिल पर स्थित परिक्रमा रेस्तंरा दिल्ली का पहला और भारत का तीसरा घूमता हुआ रेस्तंरा है।

परिक्रमा रेस्टोरेंट में दो लिफ्टे कार्यरत है। इसमें ये एक लिफ्ट अति तेज गति की है जो कि केवल 32 सैंकड में धरती से 24वीं मंजिल तक पहुंचा देती है। परिक्रम रेस्तरां एक चक्कर लगाने के लिए 90 मिनट का समय लेता है। वह रेस्तंरा सुन्दर, साज सज्जा एवं वातावरण से सुसज्जित है।

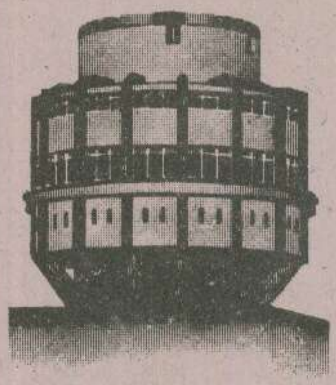

यहां पर कई प्रकार के व्यंजन मनमोहक तरीके के परोसे जाते है। रेस्तंरा से ऐतिहासिक स्थल, पार्क तथा शपिंग केन्द्र आदि कई सुन्दर दृश्य देखे जा सकता है।

अत्याधुनिक विमान

सोवियत संघ भारत को अपना अत्याधुनिक लड़ाकू विमान याक 141 देने की पेशकश करने वाला है। यह विमान छोटी पट्टियों से उड़ान भर सकता है और उनपर उतर भी सकता है।

kissekahani.com

नहले पर दहला

किसी जंगल में एक पेड़ पर गोलू बंदर रहता था, इसी पेड़ के नीचे जमीन में बिल बनाकर फरू खरगोश रहता था, दोनों पड़ोसी व मित्र थे।

पिछले दो तीन दिन से गोलू बहुत खुश था क्योंकि उसके मामा के लड़के की शादी थी और वह भी उसमें जा रहा था। पिछली बार जब हम मामा के बड़े लड़के की शादी में गया था तो कितनी मजेदार दावत खाई थी, लौटते समय मामा ने फल मिठाईयों से भर कर बड़ा सा टोकरा भी बांध दिया था। गोलू खाने पीने का बहुत शौकीन था इसलिए दावत याद कर करके खुश हो रहा था।

फरू दो तीन दिन से गोलू को खुश देख रहा था। उसने गोलू से कह रखा था कि जाने से पहले दिन रात को वह उससे बैग ले जाए जिसमें वह कपड़े आदि रखकर ले जा सकता था। गोलू का पास शादी में ले जाने योग्य कोई सुन्दर सा बैग नहीं था। इसलिए उसने फरू से उसका बैग मांगा था।

जब रात को गोलू फरू के घर बैग लेने गया तो फरू बोला, गोलू बैग तो तुम ले जाओ पर मैं तुम्हें ये राय नहीं दूंगा कि कल तुम शादी में जाओ।'

क्यों भाई मेरे मामा के लड़के की शादी है और दावत खाने मैं ही न जाऊँ ? भई मैं तो तुम्हारे ही भले की कह रहा था। शाम को 7 बजे वाले समाचार में मैंने ट्रजिस्टर में सुना था कि कल मौसम बहुत खराब रहेगा।

पर मुझे तो मौसम साफ दिखाई दे रहा है।

अरे गोलू मौसम का क्या भरोसा ये तो मिनट-2 में बदलता है फिर अभी तो पूरी रात पड़ी है बीच में तो अभी सवा नौ बजे वाले समाचार खत्म होने ही वाले होंगे मौसम के बारे में तो ही तो

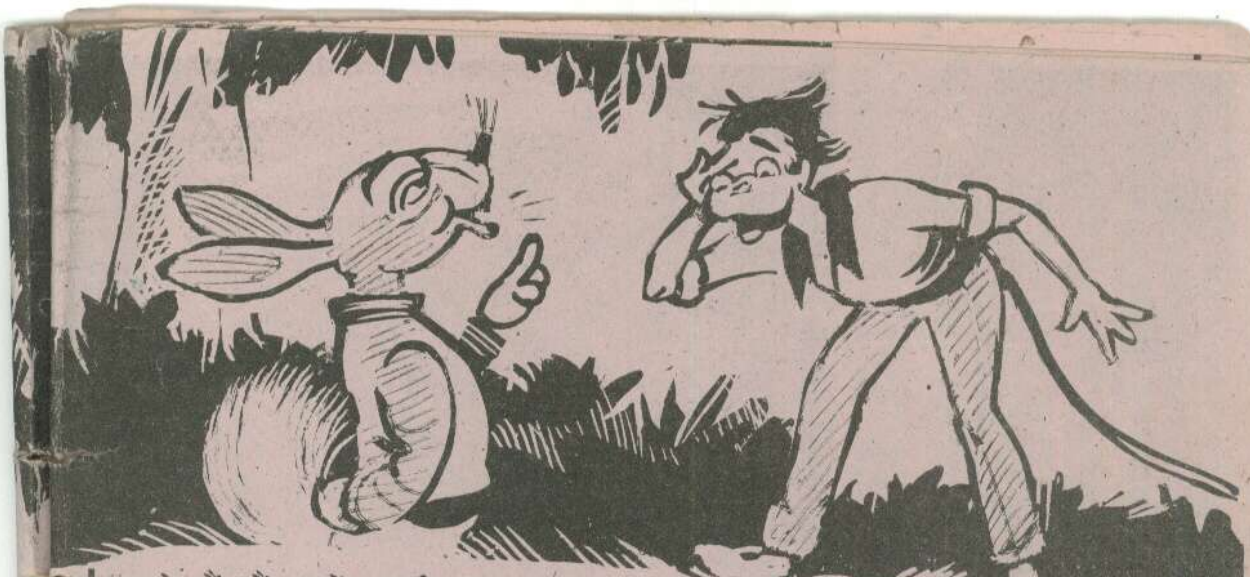

बताते हैं मैं तुम्हें अभी सुनवाए देता हूँ, खुद सुनकर फैसला कर लो, कहते हुए फरू अपना टू इन वन उठा लाया और ट्रांजिस्टर का स्विच ऑन कर दिया।

समाचार चल रहे थे आज हमारे वन के राजा शेर ने नए पेड लगाने के लिए एक विशेष इनाम देने की घोषणा की इस वर्ष का ये विशेष पुरूस्कार डमडम भालू को दिया गया है। महाराज का कहना है कि अगले वर्ष के अन्त तक हमारे वन में लगभग दो हजार नए पेड़ लगाने की योजना है इससे न केवल हम सबको सुरक्षा व भोजन मिलेगा बल्कि यहाँ का पर्यावरण स्वच्छ रखने में भी मदद मिलेगी और अब अन्त में मौसम की जानकारी-

मौसम विभाग वालों ने सूचना दी हैं कि कल तेज आंधी तूफान के साथ वर्षा होने की संभावना है कहीं कहीं ओले भी गिर सकते हैं, आप सब से अनुरोध है कि अपने घरों से बाहर न निकलें और सुरक्षित स्थानों पर शरण ले क्योंकि तेज हवाएं चलने से पेड भी गिर सकते हैं। आज का तापमान...

फरू ने ट्रांजिस्टर बंद कर दिया।

गोलू सोच में पड़ गय। ऐंसी दावत का क्या लाभ जो जान के भी लाले पड़ जाए हो सकता है वह कहीं रास्ते में ही फँस जाए और मामा के घर तक पहुँच ही न पाए उसने अपना जाना रद्द कर दिया।

अगले दिन जब गोलू देर से सोकर उठा तो मौसम एकदम साफ था तेज धूप निकल रही थी। कई घंटे गोलू मौसम बदलने का इंतजार करता रहा पर सारा दिन निकल गया और मौसम साफ ही रहा। उसे फरू पर बड़ा क्रोध आया। अच्छा खासा जा रहा था। कि बेकार में समाचार सुनवा दिए अब तो मामा के घर जाने का समय भी नहीं बचा अगर सुबह सवेरे ही निकल गया होता तो सही समय तक पहुँच जाता व इस समय दावत उड़ा रहा होता। ये मौसम विभाग वाले भी उल्टी सीधी खबरे देते रहते है। गोलू क्रोध में भरकर फरू के घर गया पर वहाँ ताला

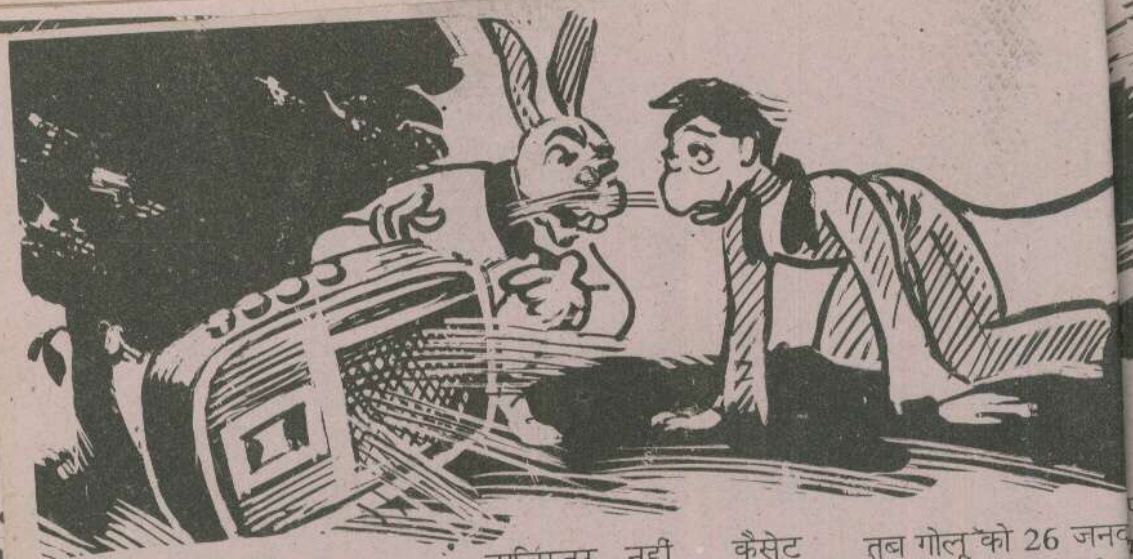

लटक रहा था।

अगले दो तीन दिन तक फरू के घर पर ताला ही रहा जब वह तीन दिन बाद लौटा तो गोलू उस पर बिगड़ गया मुझे तो तुमने समाचार सुनवा कर घर में बिठा दिया जबकि मौसम साफ ही रहा और तुम कहाँ चले गए थे ?

मैं ? तुम्हारे मामा के घर दावत खाने, फरू ने शरारत भरे स्वर में कहा। पर जब मौसम खराब होने की आंशका थी तो तुम कैसे चले गए ?

किसने कहा कि मौसम खराब रहेगा ? मुझे क्या पता तुम इतने बुद्धू हो कि मेरी आवाज भी नहीं पहचानागे। तुम ट्रांजिस्टर व कैसेट की आवाज का अन्तर भी नहीं पहचानते। मैंने टू इन वन में ट्रांजिस्टर नहीं कैसेट चलाई थी जो मैंने अपनी आवाज में भर कर पहले से ही रखी हुई थी।

पर तुमने ऐसा क्यों किया ? तुमने मुझे धोखा दिया है मामा भी क्या सोचते होंगे मैं शादी में क्यों नहीं आया।

इसकी तुम चिन्ता न करो मैंने उनसे कह दिया कि तुम जरूरी काम से दूसरे जंगल में गए हुए हो तुमने अपनी जगह अपने दोस्त यानि मुझे भेजा है।

मेरी दावत खुद उड़ा आए दूसरे के माल हड़पते तुम्हें शर्म नहीं आई, गोलू बोला। अच्छा जी मैंने जरा सा नहले पर दहला मार दिया तो इतना गुस्सा हो रहे हो जरा याद करो तुमने 26 जनवरी को मेरे साथ क्या किया था ?

तब गोलू को 26 जनव की घटना याद हो आई। बार की तरह इस बार शेर महाराज की ओर से जनवरी को पूरे जंगल मिठाई बाँटी जानी थी। मिठाई का बहुत शौकीन सोचा क्यों न इस बार के हिस्से की भी मिठाई ली जाए फिर उसने उपाय सोचा।

सर्दियों की रात में पड़ने से सारे पत्तों पर पानी बूंदे तो जमा थी ही गोलू फरू के बिल के वाली डाली पर ताक कर बैठ गया। जैसे ही सुबह फरू मिठाई लेने को अपने बिल से निकलने लगा गोलू ऊपर वाली डाली पर जोर से कूदता हुआ

फरू बाहर मत
मौसम बहुत खराब
हो रही है। भीग क
पड़ जाओगे तुम्हारे
बाल भी गंदे हो जाएं
फरू के ऊपर
डालियों पर कूदने
की बूंदे पडी कुछ
झड़कर गिरे तथा
हिलने से खूब
आवाज भी हुई उस
काफी वर्षा व आं
रही है और वह वा
में फौरन घुस गया।
कई घंटे बाद
दोबारा बाहर निकल
धूप खिली थी
उसका मजाक बना
कैसा उल्लू बनाया
से कहा फरू बीम
नहीं सकता उसक
मुझे दे दीजिए मै

फरू बाहर मत निकलो मौसम बहुत खराब है, वर्षा हो रही है। भीग कर बीमार पड़ जाओगे तुम्हारे सफेद बाल भी गंदे हो जाएंगे।

फरू के ऊपर गोलू के डालियों पर कूदने से ओस की बूंदे पडी कुछ पत्ते भी झड़कर गिरे तथा डाली हिलने से खूब पत्तों की आवाज भी हुई उसने सोचा काफी वर्षा व आंधी चल रही है और वह वापस बिल में फौरन घुस गया।

कई घंटे बाद जब फरू दोबारा बाहर निकला तो तेज धूप खिली थी और गोलू उसका मजाक बना रहा था, 'कैसा उल्लू बनाया मैंने राजा से कहा फरू बीमार है आ नही सकता उसकी मिठाई मुझे दे दीजिए मैं उसे ले जाकर दे दूंगा और तुम्हारे हिस्से की मिठाई भी मैं खा गया।'

पर ये तो सरासर धोखा है ये कोई अच्छी बात नहीं, फरू खिसिया कर बोला। मुझे क्या पता था तुम इतने बुद्धू ही कि वर्षा व ओस की बूंदों में अंतर करना भी नहीं जानते।

गोलू ये सब सोच रहा था कि फरू की आवाज नें उसे चौका दिया, 'क्यों याद आया कुछ? मैंने भी वही किया मैंने तुम्हारे मामा के घर जाकर तुम्हारे हिस्से की मिठाई खा ली। साथ में टोकरा भर मिठाई लाया भी था ये कहकर कि गोलू को दे दूंगा। उसमें से थोड़ी सी बची है तुम चखना चाहो तो फरू ने चिढ़ाने के अंदाज में कहा।

'गोलू अपना सा मुंह लेकर रह गया।

-वन्दना गुप्ता